37

आशा से जीवित रहना

(8:17-25)

इफिसुस के मसीही लोगों के नाम लिखते हुए पौलुस ने उन्हें मसीही बनने से पूर्व ही उनकी आत्मिक स्थिति का स्मरण कराया: ''तुम लोग उस समय मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे'' (इफिसियों 2:12)। ''आशाहीन''! कितना भयदायक शब्द है। जीवन की टूट-फूट में, आशा हमें चलाए रखती है। बीमार होने पर हम कह सकते हैं, यदि हमें स्वस्थ होने की आशा हो। गरीबी आने पर हम जीवित रह सकते हैं, यदि हमें सहायता मिलने की आशा हो। घर में परेशानी आने पर हम काम कर सकते हैं, यदि हमें आशा हो कि स्थिति सुधर जाएगी। परन्तु जब हम अपने आपको कठिन परिस्थितियों में पाएं और कोई आशा न हो तो लगता है कि हम हिम्मत हार जाएंगे, निराश होंगे। आशा हम सब के जीवन में फर्क लाती है।

वियना के एक यहूदी मनोवैज्ञानिक विक्टर एमिल फ्रेंक्ल को द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान एक जर्मन नज़रबंदी शिविर और स्वीज़ में बंदी बना लिया गया। उसने देखा कि कुछ कैदियों ने जीने के लिए संघर्ष करना छोड़कर अपने आपको मरने के लिए छोड़ दिया, जबकि अन्य ने उन खतरनाक स्थितियों पर विजय पा ली। फर्क इतना था कि कैदियों के पहले समूह को लगा कि स्थिति आशाहीन है, जबकि दूसरे समूह का मानना था कि अन्त में नाज़ियों की हार होगी और उन्हें छोड़ दिया जाएगा। उस शिविर में बचने की आशा रखने वाले लोग ही बाद में अर्थ भरा जीवन बिता पाए।[1] आशा जीवन को बदल देती है।

उन समयों के बारे में क्या कहा जाए, जब लगता है कि उम्मीद करने का कोई कारण नहीं है। हो सकता है कि अविश्वासी व्यक्ति कोई आशा न कर सकता हो, परन्तु विश्वासी मसीही हमेशा किसी न किसी बात की आशा रख सकता है। यदि उसकी बीमारी का इलाज नहीं हो सकता, तो वह उस देश की राह देख सकता है जहां ''मृत्यु न रहेगी, और शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी'' (प्रकाशितवाक्य 21:4)। यदि उसकी सांसारिक सम्पत्ति ले ली जाए तौ भी उसे मालूम हैं कि उसके लिए ''स्वर्ग में धन'' है (मत्ती 6:20)। खलबली और बेकार त्रासदी आने पर उसे एक दिन प्रभु की महिमामय उपस्थिति में होने की आशा है (देखें यूहन्ना 14:1-3)।

बहुत साल पहले मैं अपने परिवार के साथ रोम में गया। हमें नगर के नीचे कब्रों के तहखाने में से ले जाया गया, जहां बहुत से मसीही लोग दफ़नाए गए थे। हमें ज़मीन के ऊपर गैर मसीही लोगों की भव्य कब्रें भी दिखाई गईं। हमें बताया गया कि मसीही कब्रों पर सबसे प्रचलित शिलालेख ''आशा'' है, परन्तु काफ़िर मुर्दों की कब्रों पर ऐसा कोई शिलालेख नहीं है। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने आशा को ''प्राण के लिए लंगर'' कहा (इब्रानियों 6:19)। जिस प्रकार लंगर तूफ़ान के बीच जहाज़ को सम्भाले रहता है, वैसे ही जीवन के तूफ़ानों में आशा हमें स्थिर रखती है।

हमारे पाठ के लिए वचन में आशा मुख्य विषय है। हमारे वचन पाठ में "आशा" शब्द पांच बार मिलता है (आयतें 20, 24, 25)। आयत 24 कहती है, "आशा के द्वारा तो हमारा उद्धार हुआ है। ..." जैसा कि हम देखेंगे, आशा की अवधारणा उन आयतों को भी डाल देती है, जिनमें यह शब्द नहीं मिलता। यह इन दो तथ्यों को दिमाग में रखने पर स्पष्ट हो जाएगा: (1) बाइबली आशा ख़्वाहिश नहीं बल्कि "इच्छा के साथ *उम्मीद*" है;[2] और (2) बाइबली आशा उस पर आधारित नहीं है, जिसे हम देख सकते हैं (आयत 24), बल्कि हमारे विश्वास के कारण उस पर है, जिसकी हम *उम्मीद* करते हैं।

मज़बूत करने वाली आशा (8:17, 18)

कष्ट की वास्तविकता (आयत 17क)

रोमियों 8:14-17 में पौलुस ने हमारे परमेश्वर की संतान होने की बात की। उसने अपने विचारों का समापन इस प्रकार किया: "हम परमेश्वर की सन्तान हैं और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, बरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं" (आयतें 16ख, 17क)। परमेश्वर के वारिस होना एक रोमांचकारी पहलू है, परन्तु हमें पौलुस के अगले शब्दों द्वारा यहां-और-भी वापस लाया जाता है: "जब हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं" (आयत 17ख)।

कुछ धार्मिक समूह कष्ट की वास्तविकता से इनकार करते हैं, जबकि अन्य यह ज़ोर देते हैं कि मसीही लोगों को कभी कष्ट की आवश्यकता नहीं है। इसके विपरीत बाइबल यह सिखाती है कि आदम और हव्वा के मना किए गए फल के खाने के बाद से कष्ट जीवन का अभिन्न अंग रहा है। मनुष्यजाति पर आने वाली सब समस्याओं के साथ यीशु के नाम में आने वाले कष्ट मसीही व्यक्ति को मिल सकते हैं (देखें 1 पतरस 4:16)। मसीह ने अपने चेलों को बताया, "यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुझें भी सताएंगे" (यूहन्ना 15:20ख)। कइयों के लिए मसीह के साथ कष्ट उठाने का अर्थ मृत्यु होगा। बहुतों के लिए इसका अर्थ नासमझी और गलतबयानी होगा। सबके लिए यह पाप में खोए संसार का बोझ होना चाहिए (देखें लूका 19:10)। आज नहीं तो कल यीशु के लिए जीने की कोशिश करने के लिए कष्ट उठाना ही पड़ेगा (देखें 2 तीमुथियुस 3:12)।

महिमा की आशा (आयतें 17ख, 18)

कष्ट आने पर हमें कौन सम्भाले रहेगा। एक महत्वपूर्ण तथ्य आशा है। यह कहने के बाद कि "जब हम उसके साथ दुख उठाएं" पौलुस ने आगे कहा, "तो उसके साथ *महिमा* भी पाएं" (8:17ख)। फिर उसने वचन की सबसे महत्वपूर्ण गहराइयों में से एक बताई: "क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रकट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं" (आयत 18)। कुछ साल पहले पौलुस ने कुरिन्थुस में अपने साथी मसीहियों को ऐसी ही बात बताई थी: "इसलिए हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन-प्रतिदिन नाश होता जाता है। क्योंकि हमारा पलभर का हल्का सा क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है" (2 कुरिन्थियों 4:16, 17)। उस सब पर विचार करें जो पौलुस ने सहन किया (देखें

2 कुरिन्थियों 11:23-29)। जहां तक उसकी बात थी यह उसे मिलने वाली "अनन्त महिमा" की तुलना में "हल्का सा ज़्लेश" था।

रोमियों 8:17 के सदंर्भ में चार्ल्स स्पर्ज़न ने पौलुस के शज़्दों के विषय में इस प्रकार कहा:

> पौलुस ने हमारे वर्तमान कष्टों को सरल गणित की बात बता दिया। उसने उन सब को मिला दिया और देखा कि उसका जोड़ ज़्या बनता है। फिर वह उस महिमा के बराबर की संज़्या बताने वाला था, परन्तु यह उसने छोड़ दिया और केवल इतना कहा, "इस समय के दुख और ज़्लेश उस महिमा के सामने जो हम पर प्रकट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं।" ज़्या वे एक हज़ार के सामने एक हैं? नहीं फिर तो उनकी तुलना हो सकेगी। यदि हमारी भावी महिमा की तुलना हमारे कष्टों का दस लाखवां भाग भी हो, तौ भी उनकी तुलना की जा सकती है। परन्तु पौलुस ने कहा कि उनकी तुलना हो ही नहीं सकती। वे कष्ट उस महिमा के सामने समुद्र में एक बूंद की तरह थे।[3]

NASB में "वह महिमा जो हम *पर* प्रकट होने वाली है।" KJV, NIV में "हम *में*" है। यूनानी धर्मशास्त्र की व्याज़्या के लिए न तो "पर" और न "में" पर्याप्त है। इसमें उपसर्ग *eis* का इस्तेमाल किया गया है। जिसका मूल अर्थ है "into." AB में उस सब को जिसका संकेत *eis* मिलता है, मिलाकर लिखा गया है "महिमा ... हम *पर* और हम *में* और हमारे *लिए* प्रकट की जाने वाली और हम *पर* दी जाने वाली!"

हम पर और हम में प्रकट होने वाली महिमा ज़्या है? हमारा वचन पाठ "परमेश्वर की संतानों की महिमा" (आयत 21) की बात करता है और इसे विशेष रूप से "हमारी देह के छुटकारे" (आयत 23) से जोड़ता है। प्रभु के वापस आने पर हमें महिमामय देहें दी जाएंगी (देखें 1 कुरिन्थियों 15:43) और उसकी महिमा का आनन्द लेने की अनुमति दी जाएगी (देखें प्रकाशितवाज़्य 21:23)। उसके आगे हम अनुमान नहीं लगा सकेंगे, परन्तु इतना आश्वस्त हो सकते हैं कि "महिमा" शज़्द में जो कुछ भी सज़्मिलित है, परमेश्वर ने वह हमारे लिए तैयार किया है। यूनानी शज़्द (*logizomai*) का अनुवाद "मैं समझता हूं" "पज़्के यकीन को दर्शाता है न कि संदेह को।"[4]

रोमियों 8:18 को छोड़ने से पहले मुझे "प्रकट" शज़्द पर ध्यान दिलाना आवश्यक है। यूनानी शज़्द, *apokalupto* (*apo* ["से"] *kalupto* के साथ ["ढांपना"]) का अर्थ "पर्दा हटाना" है। इस समय यदि हमारी महिमा पर "पर्दा" पड़ा हुआ है तो इसका अर्थ यह है कि यह अदृश्य है, जिसका यह अर्थ है कि *आशा* की आवश्यकता है। आयत 25 कहती है कि "जिस वस्तु को हम नहीं देखते, उसकी आशा रखते हैं।"

साझी आशा (8:19-23)

महिमा की हमारी आशा पर चर्चा करते हुए पौलुस ने कोई अनापेक्षित बात नहीं कही। उसने हमारी आशा को 19-23 आयतों में सारी सृष्टि की आशा से जोड़ा। ये आयतें नये नियम में किसी और पद से मेल नहीं खातीं।

सृष्टि की आशा (आयतें 19-22)

उसने कहा, ''ज़्योंकि सृष्टि[5] बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है''[6] (आयत 19)। ''परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने'' का अर्थ ''वह महिमा है, जो हम पर प्रकट होने वाली है'' और हम में और हम पर और हमारे लिए (आयत 18) यानी वह समय जब मसीह वापस आएगा, हमें अपनी महिमामय देहें मिलेंगी और प्रभु हमें अपने साथ ले लेगा। (सुझाव दिया गया है कि ''परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने'' का अर्थ इस तथ्य से जुड़ा हो सकता है कि जब मसीह वापस आएगा तो यह प्रकट हो जाएगा कि हम सचमुच परमेश्वर की संतान हैं तब अविश्वासी और विरोधी लोगों को सच्चाई स्वीकार करनी पड़ेगी।)

पौलुस ने यह संकेत देने के लिए कि सृष्टि उस महिमामय घटना की प्रतीक्षा कितनी उत्सुकता और उतावलेपन से करती है, रेखाचित्र शब्दों का इस्तेमाल किया। ''बाट जो रही'' शब्द तीन शब्दों *apo* (''से'') *kara* (''सिर'') और *dokeo* (''देखना, निगरानी करना'') से बने मिश्रित यूनानी शब्द *apokaradokia* से लिया गया है।[7] इसका अर्थ ''सिर उठाकर प्रतीक्षा करना, और उस क्षितिज पर नज़रें टिकाना है।''[8] एक व्यक्ति की नीचे पटरी की ओर झुककर उत्सुकता से रेलगाड़ी को आते देखने की कल्पना करें जिसमें उसका कोई प्रियजन आ रहा है।[9] ''बाट जोह रही है'' का अनुवाद *apekdechomai* से किया गया है। यह *apo* से मज़बूत किए गए ''उज़्मीद करना'' (*ek* [''से बाहर''] के साथ *dechomai* [''प्राप्त करना'']) के लिए शब्द से लिया गया है। यह उत्सुक पूर्वानुमान का सुझाव देता है।[10] फिलिप्स के अनुवाद में ''परमेश्वर के पुत्रों को अपनी ओर आने के अद्‌भुत दृश्य को देखने के लिए पूरी सृष्टि पंजों के बल खड़ी है।'' मेरे ध्यान में पंजों के बल खड़ा और खिड़की से बाहर झांकता हुआ एक बच्चा आता है, जो अपने पिता के घर आने की राह देख रहा है।

यहां पर लोग एक प्रश्न पूछते हैं कि ''उत्सुकता और उतावलेपन से प्रतीक्षा कर रही यह 'सृष्टि' कौन सी *है?*'' अनुवादित शब्द ''सृष्टि'' (*ktisis* से) का अर्थ सृष्टि का कार्य या जो सृजा गया है हो सकता है।[11] इस आयत में यह उसकी बात है, जो सृजा गया है। परन्तु पौलुस के मन में *कौन सी* वस्तु थी? इस प्रश्न पर अलग-अलग दृष्टिकोण पाए जाते हैं।[12] उदाहरण के लिए कइयों का मानना है कि पौलुस केवल परमेश्वर के लोगों पर चर्चा को आगे बढ़ा रहा था। ऐसा लगता बहुत कम है ज़्योंकि यह ''सृष्टि'' आयत 23 के आरम्भ में परमेश्वर के लोगों से अलग हैं: ''और केवल वही नहीं [केवल सृष्टि ही नहीं कराहती] पर हम भी [परमेश्वर की संतान] ... आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की बाट जोहते हैं।''

अन्य इस बात पर ज़ोर देते हैं कि ''सृष्टि'' गैर मसीही लोगों को कहा गया है। वे इस प्रमाण को श्रेणीबद्ध करते हैं कि लोग हर जगह, यहां तक कि मूर्तिपूजक भी इस जीवन के बाद कुछ बेहतर की बाट जोहते हैं। एक अर्थ में यह सत्य होने के बावजूद कि गैर मसीही संसार बेहतर कल के लिए ''तड़प रहा'' है, यह व्याख्या संदर्भ से मेल खाती प्रतीत नहीं होती। आयत 21 कहती है कि ''सृष्टि भी आप ही विनाश के *दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की संतानों की* महिमा की स्वतन्त्रता प्राप्त करेगी।'' यह सामान्य अर्थ में उद्धार रहित मनुष्यजाति के लिए कही गई बात नहीं लगती।

सम्भवतया ''सृष्टि'' को ''मानवीय आत्मा के बजाय पूरे भौतिक संसार'' के रूप में मानना

बेहतर होगा।[13] जे. डब्ल्यू. मैज़गर्वे ने लिखा: ''इस बात पर काफ़ी बहस होती है कि 'सृष्टि' का ज़्या अर्थ है। संदर्भ से हम यह मानते हैं कि उसके कहने अर्थ मनुष्यजाति को छोड़ पृथ्वी और इस पर का सारा जीवन है।''[14]

इस विचार पर कई आपज़ियां की जाती हैं। एक आपज़ि यह है कि सृष्टि की बाट जोहने, प्रतीक्षा करने, कराहने और दुखी होने की बात की गई है। जो सब एक व्यज़्ति की गतिविधियां हैं, न कि वस्तु की। परन्तु पवित्र शास्त्र आम तौर पर वस्तुओं के गाने, चिल्लाने, या कोई और मानवीय गतिविधि करने की बात करता है (देखें भजन संहिता 96:12; 98:8; यशायाह 35:1; 55:12)। इसे ''मानवीकरण'' जिसमें *वस्तु* की बात ऐसे की जाती है, जैसे वह *व्यज़्ति* हो। निर्जीव वस्तुओं के ''बाट जोहने'' और ''प्रतीक्षा करने'' की बात सोचकर मैं अपने मन में आधे बने मकान के पूरे निर्माण की ''प्रतीक्षा करने,'' अधूरी पेंटिंग के कलाकार के अन्तिम छोर की ''बाट जोहने'' और अधूरी हस्तलिपि की कहानी पूरा होने के लिए ''पुकारने'' की कल्पना करता हूं।

इस विचार का कि ''सृष्टि'' यहां सामान्य अर्थ में सृजे गए संसार को कहा गया है, एक और आपज़ि यह है कि यह शज़्द मरकुस 16:15 तथा कुलुस्सियों 1:23 वाले लोगों के लिए ही होंगे। डग्लस जे. मू. ने इस पर टिप्पणी की:

> पौलुस इस शज़्द का इस्तेमाल मानवीय ''जीवों'' के लिए कर सकता है (गलातियों 6:15; कुलुस्सियों 1:23), परन्तु आम तौर पर वह इसे परमेश्वर की समस्त सृष्टि के लिए लागू करता है (रोमियों 1:20, 25; 2 कुरिन्थियों 5:17; कुलुस्सियों 1:15)। यहां इसके अर्थ की कुंजी यह तथ्य है कि पौलुस ज़ोर देता है कि निराशा ''सृष्टि'' की निराशा, इसका अपना दोष नहीं है। इसलिए हम ... मानवीय जीवों को निकाल देते हैं। ...[15]

कई अनुवादों में यह विचार मिलता है कि पौलुस के मन में सामान्य सृष्टि थी: NEB में ''created universe''; NIrV में ''created world'' और NCV में ''everything God made''है। हम 2 पतरस 3:7 तथा प्रकाशितवाज़्य 21:1 से वाज़्यांश लेकर इसका अर्थ ''*वर्तमान* आकाश और पृथ्वी'' या ''*पहला* आकाश व पृथ्वी'' कर सकते हैं। हम इसे ''पहला आकाश और पृथ्वी'' के रूप में भी विचार सकते हैं (2 पतरस 3:13; प्रकाशितवाज़्य 21:1)। हमारे वचन पाठ में सृष्टि के विषय में कही गई हर बात इसकी व्याज़्या से मेल खाती है।

यदि पौलुस के मन में सृजित संसार (मनुष्य जाति से अलग) मसीह की वापसी के समय प्रतीक्षा करते और बाट जोहते थे, तो अगला प्रश्न है कि ''सृष्टि इतनी उत्सुकता से और इतनी उतावलेपन से बाट ज़्यों जो रही है?'' आदम के पाप के इस वैश्विक प्रभाव के कारण; मनुष्यजाति और सामान्य अर्थ में संसार में निकटता के कारण। आदम के पाप करने पर केवल मनुष्य जाति नहीं,[16] बल्कि संसार की सारी सृष्टि प्रभावित हुई थी। आदम को बताया गया था, ''भूमि तेरे कारण शापित है: तू उसकी उपज जीवन ज़र दु:ज़ के साथ ज़ाया करेगा:और वह तेरे लिए कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी'' (उत्पज़ि 3:17ख, 18क)।

पाप कितना बुरा है? इतना बुरा कि यह पूरे संसार को हानि पहुंचा सकता है! संसार में अभी भी भलाई और सुन्दरता है। परन्तु बुराई और कुरूपता अर्थात पाप का परिणाम भी है। एक महिमा प्रार्थना कर रही थी, ''हे प्रभु यदि तुमने आज सुबह का अखबार पढ़ा है तो तुज़्हें पता होगा कि

संसार में कितनी गड़बड़ है!''[17] प्रभु को यह सब जानने के लिए अखबार पढ़ने की आवश्यकता नहीं है; यह गड़बड़ तो आदम और हव्वा के अदन की वाटिका से निकाले जाने के समय से बनी हुई है। लैरी डियसन ने लिखा है कि ''मनुष्य का कष्ट *न्यायपूर्वक* है,'' जबकि ''सृष्टि *परिणामस्वरूप* कष्ट सहती है''[18] यानी यह आदम के पाप का परिणाम है।

सृजित संसार के लिए आदम के पाप का परिणाम ज़्या था। पौलुस ने आगे कहा, ''ज़्योंकि सृष्टि व्यर्थता के आधीन की गई''[19] (8:20)। व्यर्थता का अनुवाद *mataiotes* से किया गया है, जिसका अर्थ ''बिना कारण'' है। *Mataiotes* ''किसी भी बात से लक्ष्यहीन होने को ... उपयोगी लक्ष्य या प्रभाव की अनुपस्थिति को चिह्नित करता है।''[20] यह सभोपदेशक 1:2 के यूनानी अनुवाद में इस्तेमाल किया गया शज़्द है: ''उपदेशक का यह वचन है कि व्यर्थ ही व्यर्थ, व्यर्थ ही व्यर्थ! सब कुछ व्यर्थ है।'' NIV में सभोपदेशक 1:2 का अनुवाद इस प्रकार किया गया है: ''अर्थहीन 'अर्थहीन! अर्थहीन!' शिक्षक कहता है। 'बिल्कुल अर्थहीन! सब कुछ अर्थहीन है।' '' *Mataiotes* शज़्द यह संकेत देता है कि पाप के कारण, पृथ्वी अपने अस्तित्व या अपने होने के कारण को पूरा नहीं कर सकती। रोमियों 8:20 में जे. बी. का अनुवाद है ''यह अपने उद्देश्य को पाने के अयोग्य की गई।''

बेशक यह सृजित संसार द्वारा लिए गए किसी बुरे निर्णय का परिणाम नहीं है। पौलुस ने आगे ''अपनी इच्छा से नहीं, पर अधीन करने वाले की[21]'' (8:20ख) कहकर इसे इसका मानवीकरण किया। पृथ्वी की यदि कोई इच्छा थी तो इसने अपने उद्देश्य को पूरा करने के अयोग्य होना नहीं चुनना था। सृजित संसार को मनुष्य के पाप के परिणाम के कारण व्यर्थ बनाने के लिए अधीन करना परमेश्वर ने ही चुना। तौ भी प्रभु ने सृजित संसार को बिना आशा के नहीं छोड़ा, आयत 20ग कहती है कि उसे व्यर्थ के अधीन ''आशा से'' किया गया था। हमारे वचन पाठ में आशा का संकेत कई बार दिया गया है। परन्तु शज़्द का इस्तेमाल यहां पहली बार हुआ है। किसकी ''आशा से''? ''आशा से ... सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतन्त्रता प्राप्त करेगी'' (आयतें 20, 21)।

''परमेश्वर की संतानों की महिमा'' का इस्तेमाल 17 और 18 आयतों में किया गया है, जो मसीह के साथ हमारे ''महिमा पाने'' और ''उस महिमा की जो हम पर प्रकट होने वाली है'' बात करती है। संदर्भ में विशेष ज़ोर ''हमारी देहों के छुटकारे'' पर दिया गया है। जी उठने के समय, जब हमें महिमामय देहें मिलेंगी (1 कुरिन्थियों 15:43), तो पहली बार हम पीड़ा और नाश और मृत्यु से *छूटेंगे*। इस कारण पौलुस ने ''परमेश्वर की संतानों की महिमा की *स्वतन्त्रता*'' की बात की। हमारी आशा सृष्टि की आशा से इस कारण जुड़ी है कि यह ''भी विनाश के दासत्व से छुटकारा पाएगी।'' मनुष्यजाति और पृथ्वी दोनों पर श्राप है (उत्पज़ि 3:16-19) इसलिए दोनों को श्राप से छुड़ाया भी जाएगा (देखें प्रकाशितवाज़्य 22:3)।

एक दिन मसीह वापस आएगा (1 थिस्सलुनीकियों 4:16, 17)। पौलुस ने विस्तार से बताया कि ज़्या होगा:

> ... सब बदल जाएंगे। और यह क्षणभर में, पलक मारते ही अन्तिम तुरही फूंकते ही होगा: ज़्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और हम बदल

जाएंगे। ज़्योंकि अवश्य है, कि यह नाशवान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले (1 कुरिन्थियों 15:51-53)।

जब हम बदल जाएंगे, तो हमें रहने के लिए *आत्मिक* देहें दी जाएंगी (1 कुरिन्थियों 15:44)। कुछ प्रकार से हम समझ नहीं सकते कि यह आत्मिक देहें हमारी शारीरिक देहों जैसी होंगी (देखें आयतें 35-38)।[22] परन्तु हमारी देहें अविनाशी, महिमा प्राप्त, सामर्थी होंगी (देखें 1 कुरिन्थियों 15:42-44)। उन *आत्मिक* देहों को रहने के लिए *आत्मिक* स्थान की आवश्यकता पड़ेगी। यीशु के अनुसार यह "पुराना" भौतिक आकाश और पृथ्वी "फैल जाएंगे" (मत्ती 24:35)। पतरस ने कहा कि यह "जल जाएगा" (2 पतरस 3:10; देखें आयत 7)-परन्तु (यदि मैं इस रूपक का इस्तेमाल करूं) राख में से "एक *नया* आकाश और पृथ्वी" (2 पतरस 3:13; प्रकाशितवाक्य 21:1) अर्थात एक *नया* आकाश और पृथ्वी *आत्मिक* आकाश और पृथ्वी निकलेंगे। फिर इसी तरह जो हमारे लिए समझना असम्भव है, "पुराना" भौतिक आकाश और पृथ्वी तथा "नया" आत्मिक आकाश और पृथ्वी में सम्बन्ध होगा।

हमें केवल इतना जानने की आवश्यकता है कि जिस प्रकार परमेश्वर ने शारीरिक देहों के रहने के लिए सिद्ध जगह के रूप में अदन की वाटिका दी थी, वैसे ही वह आत्मिक देहों के लिए सिद्ध निवास देगा (देखें यूहन्ना 14:2, 3; प्रकाशितवाक्य 21; 22)। क्या मुझे यह याद है? यदि मैं यह समझ नहीं सकता कि आत्मिक देह कैसी होगी, तो मैं यह कैसे समझ सकता हूं कि उस देह के लिए आत्मिक निवास कैसा होगा? मेरे लिए इतना जानना ही काफ़ी है कि परमेश्वर के अनुग्रह से मैं वहां अनन्तकाल का समय बिता सकता हूं (देखें मत्ती 6:9; प्रकाशितवाक्य 21:1, 22, 23; 22:1, 3) यानी वह जगह जिसे "स्वर्ग" कहा जाता है (देखें फिलिप्पियों 3:20; कुलुस्सियों 1:5)।[23]

अब के लिए, हमें अपने वचन पाठ तथा इस वर्तमान संसार द्वारा सही जाने वाली परेशानी में वापस आना होगा। जैसे हम उस महिमामय दिन की राह देखते हैं, जिसमें हम बदल जाएंगे, वैसे ही (परिणामस्वरूप) सृजित संसार उस दिन की राह देखता है। पौलुस ने कहा कि "क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि ... मिलकर कराहती है ..." (रोमियों 8:22)। पौलुस ने कहा कि "हम जानते हैं क्योंकि जो कुछ वह कह रहा था" वह सामान्य ज्ञान था (और है); यह उन सब लोगों को जो संसार में समस्याओं की ओर इधर-उधर देखते हैं, स्पष्ट हो जाना चाहिए। "मिलकर कराहती है" का यूनानी शब्द *sustenazo* (*stenazo* ["कराहना"] के साथ *sun* ["के साथ"[24]] से) पौलुस अलंकार की भाषा प्रयोग कर रहा था; परन्तु जब मैं पृथ्वी के "कराहने" का विचार करता हूं, तो वह मेरे कानों में संसार के गड़बड़ की बातें सुनाई देती हैं: भूकम्प की गड़गड़ाहट, तूफ़ान या आंधी का शोर, जंगल की आग की चटचट, टकराती लहरों की गरज। प्रेरित ने कहा कि यह कराहना "अब तक" बना रहा। यह हमारा "अब" के साथ-साथ पौलुस का भी है। कराहना आज के दिन तक जारी है और प्रभु के वापस आने तक रहेगा।

परन्तु पृथ्वी की पीड़ा और दर्द व्यर्थ नहीं हैं। पौलुस ने कहा कि "सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती है और जनने की पीड़ाओं से तड़पती है।" "जनने की पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है" एक ही यूनानी शब्द *sunodino* (*odino* ["जनने की पीड़ाओं का कष्ट"[25]] पूर्वसर्ग *sun*

["के साथ"]) से लिया गया है। कहा जाता है कि सृष्टि को *मृत्यु* की पीड़ाएं नहीं, बल्कि *जन्म* की पीड़ाएं लगीं।[26] वे स्त्रियां जिन्होंने जनने की पीड़ा को भोगा है, पौलुस के रूपक को पुरुषों से बेहतर समझ सकती हैं। यह पीड़ा भयंकर होगी (मैं अपनी पत्नी के हमारे तीन बेटियों को जन्म देने की पीड़ा का विचार करता हूं), परन्तु यह पीड़ा व्यर्थ नहीं है; यह एक उद्देश्य की ओर बढ़ रही है और वह उद्देश्य नया जीवन है। पौलुस के रूपक ने पुराने आकाश और पृथ्वी का कराहना और तड़प, आने वाले बेहतर दिन का जो *नये* आकाश और पृथ्वी का दिन है, प्रमाण देता है।

हमारी आशा (आयत 23)

आयत 23 में पौलुस सृजित संसार से मसीही लोगों की ओर बढ़ गया: "और केवल वही नहीं बल्कि हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है, आप भी अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने, अर्थात अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं।" परमेश्वर की संतान के रूप में हमें पहले ही बड़ी-बड़ी आत्मिक आशिषें दी गई हैं। उदाहरण के लिए हमें "... आत्मा के पहले फल" मिले हैं। "पहले फल" अभिव्यज्ति "धन्यवाद तथा पूर्वाभास की अभिव्यज्ति दोनों के रूप में, पुराने नियम के गेहूं का पहला फल देने के नियम से ली गई है।"[27] (देखें निर्गमन 23:19; लैव्यव्यवस्था 23:10, 11)। "पका हुआ पहला अनाज छितराने का एक ढंग था कि और आने वाला है। बेहतर चीज़ें तो अभी आने वाली हैं!"[28] NCV में "हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञा के पहले भाग के रूप में आत्मा मिला है"[29]

तौभी हम उसके लिए जो आने वाला है फिर भी "अपने आप में कराहते हैं।" इससे पहले कुरिन्थियों के नाम पौलुस ने लिखा था, "इस [शारीरिक देह] में तो हम कराहते, और बड़ी लालसा रखते हैं; कि अपने स्वर्गीय घर [आत्मिक देह] को पहिन लें" (2 कुरिन्थियों 5:2)। जितना अधिक मैं जीऊंगा उतना ही अधिक मुझे इस नाश होते जीवन में कराहने के विषय में पौलुस की बात समझ आएगी; यह ढह रहे घर की तरह है!

इस प्रकार पौलुस ने कहा कि हम इस पुरानी देह से छुटकारे और अपनी नई देह पाने के लिए "बाट जोहते" हैं। "बाट जोहते" उसी शज़्द से लिया गया है, जिसका अनुवाद आयत 19 में "बाट जोह रही" किया गया है। यानी जैसे सृजित संसार "पंजों के बल खड़ा है," वैसे ही हम बड़ी सरगर्मी से उसकी राह देखते हैं!

कइयों ने सुझाव दिया है कि हमारा कराहना और उत्सुकता से राह देखना आत्मा के पहले फल पाने के *बावजूद* नहीं, बल्कि आत्मा के पहले फल दिए जाने *के कारण* है। ज़्योंकि हमें स्वर्ग के "पहले फलों" का नमूना दिया गया है। इस कारण हम शेष आत्मिक उपज को पाने की और भी लालसा रखते हैं। (किसी छोटे बच्चे का विचार करें जिसे थोड़ा सा केक चखने के लिए दिया गया और प्रतिज्ञा की गई है कि खाना खत्म हो जाने के बाद उसे "बड़ा केक" दिया जाएगा।)

हम किसकी "बाट जोहते" हैं? "लेपालक होने की" ज़्या मैंने सही पढ़ा है? 8:15 में हमने पढ़ा कि "लेपालकपन की आत्मा *मिली है*" (8:15)। तो फिर पौलसु ने यहां ज़्यों कहा कि हम "लेपालक होने की *बाट जोहते हैं*"? ज़्योंकि वह अपनी बात को समझाने के लिए अलग रूपक बनाने में हिचकिचाया नहीं। उदाहरण के लिए उसने प्रभु और कलीसिया के बीच सज़्बन्ध को समझाने के लिए विवाह के रूपक का इस्तेमाल कई बार किया (देखें रोमियों 7:4; इफिसियों

5:22-33); परन्तु एक और जगह उसने कलीसिया को भावी दुल्हन के रूप में बताया (2 कुरिन्थियों 11:2), जो अभी दुल्हन नहीं है।

यदि हम लेपालकपन या गोद लिए जाने पर पौलुस के शब्दों से सहमत होने की आवश्यकता समझते हैं, तो हम इस प्रकार कह सकते हैं: हमारे परमेश्वर के लेपालक संतान होने में *एक अर्थ* है और लेपालक होने की प्रक्रिया के अभी पूरा न होने में भी *एक अर्थ* है। संदर्भ यह स्पष्ट करता है कि हमें पुत्र होने के लाभ मिल गए, परन्तु यह इस बात का संकेत भी देता है कि यह प्रक्रिया मसीह की वापसी के समय शारीरिक पुनरुत्थान से पहले पूरी नहीं होगी। मुझे उस विशेष दिन का स्मरण आता है, जब ओक्लाहोमा नगर की एक आदालत में अपने परिवार सहित गए, जहां एक जज ने हमारे नाती एलाइजा के गोद लिए जाने को मंजूरी दी। एलाइजा से प्रेम और कोमलतापूर्वक उसकी देखभाल में कोई अन्तर नहीं आया, परन्तु अदालत ने गोद लिए जाने को *कानूनी* बना दिया।

एक अर्थ में पौलुस ने कहा कि हमारे आत्मिक गोद लिए जाने की प्रक्रिया "हमारी देह के छुटकारे[30]" के समय पूरी होगी। सी. जे. पी. में "... हम पुत्र होने की प्रतीक्षा उत्सुकता से करते जा रहे हैं-यानी, अपनी पूर्व देहों के छुड़ाए जाने और स्वतन्त्र होने की।" कइयों को इस बात का आश्चर्य होगा कि *देह* का छुटकारा (पुनरुत्थान के समय) पौलुस की चर्चा का चरम बिन्दु है। याद रखें कि पौलुस सृष्टि के बाट जोहने और हमारे बाट जोहने दोनों को जोड़ रहा था। आदम के पाप से सृजित संसार में मृत्यु और विनाश आएगा, और इसके साथ ही शारीरिक देह की मृत्यु और विनाश भी (देखें 1 कुरिन्थियों 15:22क; इब्रानियों 9:27)। परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियों के रूप में हमें अद्भुत आशिषें मिली हैं। तौभी जब तक हम अपनी शारीरिक देहों में रहते हैं, हम पीड़ा और परीक्षा के अधीन रहेंगे (1 यूहन्ना 2:16), तौ भी हम अभी स्वर्ग में परमेश्वर के साथ नहीं रह सकते (देखें 1 कुरिन्थियों 15:50)। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हम अपनी देहों के "छुटकारे" की राह देख सकते हैं!

हाल ही में मैंने एक दज़्पज़ि के बारे में पढ़ा, जिनके बेटे जस्टिन को टोरेट'स सिंड्रोम था, जो ऐसी बीमारी है कि इससे आदमी का अपने शरीर पर नियन्त्रण नहीं रहता और वह ऊल-जलूल बातें करता है। दवा लेना कई बार सहायक होता है, परन्तु इसका इलाज नहीं है। एक दिन उसकी माता उसे उसकी दो बहनों के साथ नगर में ले गई। लड़का सार्वजनिक स्थान में परेशानी का कारण बन गया, और परिवार को जल्दी-जल्दी वहां से निकलना पड़ा। एक बहन ने रोते हुए अपनी मां से पूछा, "ज़्या जस्टिन हमेशा ऐसा ही रहेगा?" बाद में माता ने यह बात अपने पति को बताई, और उसने पूछा, "तुमने उसे ज़्या बताया?" उसने आंसू पोंछते हुए कहा, "मुझे नहीं मालूम था कि ज़्या कहूं।" जस्टिन के पिता ने अपनी पत्नी को गले लगाते हुए कहा, "अगली बार, उसे बताना कि जस्टिन हमेशा ऐसा *नहीं* रहेगा। एक दिन, प्रभु वापस आएगा और जस्टिन को एक शानदार देह अर्थात सिद्ध शरीर दिया जाएगा, जिसमें न कोई त्रुटि होगी और न कोई कमी।"[31]

ज़्या आपका शरीर पीड़ा से ग्रस्त है? ज़्या आप शरीर की निर्बलता से लड़ते हैं? यदि आप परमेश्वर की विश्वासयोग्य संतान हैं, तो हमेशा ऐसा *नहीं* रहेगा! यूहन्ना ने लिखा है, "हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की संतान हैं, और अब तक यह प्रकट नहीं हुआ, कि हम ज़्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रकट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, ज़्योंकि उसको वैसा ही

देखेंगे जैसा वह है'' (1 यूहन्ना 3:2)!

दृढ़ आशा (8:24, 25)

निश्चित आशा

जब सृजित संसार व्यर्थ के अधीन किया गया था, तो यह एक दिन ''स्वतन्त्रता'' पाने की ''आशा में'' था (आयतें 20, 21)। हमें भी आशा दी गई है: ''आशा के द्वारा तो हमारा उद्धार हुआ है'' (आयत 24क)। KJV में ''आशा *में*'' है जबकि अन्य संस्करणों में ''आशा के द्वारा'' है (KJV ; मेकोर्ड; देखें फिलिप्स; NRSV फुट नोट्स)। ''आशा में/के द्वारा'' का अनुवाद सज्प्रदान बोधक में (परोक्ष वस्तु की तरह) ''आशा'' (*elpis*) के लिए शज़्द से किया गया है। यूनानी धर्मशास्त्र में ''आशा'' से पहले कोई उपसर्ग नहीं है, सो उपसर्ग लगाना आवश्यक है। कई अनुवादों में उपसर्ग ''में'' किया गया है जबकि अन्यों में ''के द्वारा'' डाला गया है। उपसर्ग चाहे जो भी हो, पौलुस इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि *आशा* स्थिर रखती और चलाए रखती है। विलियम बार्कले ने लिखा, ''दहकती सच्चाई जिसने पौलुस के लिए जीवन की ज्योति जगाई, यह थी कि मानवीय स्थिति आशाहीन नहीं।''[32]

कई लोग आयत 24 में ''के द्वारा'' उपसर्ग के इस्तेमाल की सज़्भावना पर आपज़ि करते हैं ज़्योंकि कहीं और पौलुस ने कहा है कि हम ''विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाते'' हैं (3:28; 5:1)। इस बात को समझें कि बेशक यह अलग-अलग गुण हैं, परन्तु विश्वास और आशा को बहुत नज़दीकी से जोड़ा गया है। इब्रानियों के लेखक ने ''विश्वास'' की परिभाषा देते हुए कहा है, ''*विश्वास आशा की* हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है'' (इब्रानियों 11:1)। आशारहित विश्वास उद्धार दिलाने वाला विश्वास नहीं है।

हमारे वचन पाठ में यहां पौलुस यह समझाने के लिए रुक गया कि ''आशा'' से उसका ज़्या अभिप्राय था: ''परन्तु जिस वस्तु की आशा की जाती है, जब वह देखने [*blepei, blepo* से] में आए, तो फिर आशा कहां रही?'' (आयन 24ख)। व्याज़्या के लिए कुछ शज़्द कहना यहां उचित है। हम यह प्रश्न कि ''जो कुछ पहले ही देख लिया उसकी आशा कौन करता है?'' और यह उज़र पढ़ते हैं, ''मैं, हर रोज़ खेत को *देखता* हूं और मुझे एक दिन इसे पाने की आशा है,'' या ''मुझे वह ड्रेस खरीदने की आशा है, जो मैंने दुकान में *देखी* है।'' कोई बच्चा कह सकता है, ''मैंने एक खिलौना *देखा* जो मुझे आशा है कि मेरे माता-पिता मुझे ले देंगे।''

यह समझने के लिए कि पौलुस ने ''देखा'' और ''देखता'' शज़्दों का इस्तेमाल इसलिए किया, ज़्योंकि हमें यह समझना आवश्यक है कि वह किसी ऐसी चीज़ की बात कर रहा था, जो इस समय शारीरिक आंख से देखी *नहीं जा सकती* (देखें 2 कुरिन्थियों 4:18) यानी मसीह के वापस आने तक देह का छुटकारा। जब अन्त में हम इस घटना को ''देखते'' हैं तो यह वास्तविकता बन जाएगी। आयत 24 में ''देखता'' के इस्तेमाल के संदर्भ में, शायद अर्थ के रूप में यह विचार करना सहायक होगा ''पास है या अन्त में पा लेता है।'' NIV में पूछा गया है, ''जो कुछ किसी के पास पहले से है उसकी आशा कौन रखता?'' फिलिप्स कहता है कि ''आशा का अर्थ हमेशा किसी बात की प्रतीक्षा करना होता है, जो कभी हमें नहीं मिली।''

पक्की आशा

परन्तु पौलुस का ज़ोर इस तथ्य पर नहीं था कि परमेश्वर की संतान के रूप में हमें अभी पूरे अधिकार मिलने हैं, बल्कि वह दिखा रहा था कि हमारे पास आश्वस्त होने का कारण है कि वे लाभ हमारे *होंगे।* हमें एक *आशा* जो हमें स्थिर रखती है: ''परन्तु जिस वस्तु को हम नहीं देखते (अभी हमें नहीं मिली है), यदि उसकी आशा रखते हैं, तो धीरज से उसकी बाट जोहते भी हैं'' (आयत 25)। यदि हम ''आशा'' शब्द के लिए ''पक्की उम्मीद'' का इस्तेमाल करें तो शायद इससे सहायता मिले। एक अर्थ में पौलुस यह कह रहा था कि ''यदि हम सचमुच, सचमुच आशीष पाने की *उम्मीद* करते हैं, जो अभी हमें नहीं मिली है, तो यह हमें *धीरज* से उसकी प्रतीक्षा करने के योग्य बनाती है।'' कहा जाता है कि जब परमेश्वर कोई प्रतिज्ञा करता है, तो विश्वास इसे मान लेता है, आशा इसकी उम्मीद करती है और धीरज इसकी प्रतीक्षा करता है।[33]

''धीरज'' के लिए यूनानी शब्द *hupomone* (*hupo* ["अधीन"] के साथ *meno* ["बने रहना"]) से लिया गया है। इसका अर्थ धीरज करने, सहने, हर हाल में बिना छोड़े बने रहने के लिए[34] है। इब्रानियों के लेखक ने लिखा कि हमें चाहिए कि ''वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें'' (इब्रानियों 12:1)। यीशु ने कहा कि ''जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा'' (मत्ती 10:22)।

पौलुस के कुछ पाठकों के लिए सताव के कारण धीरज रखना विशेषकर कठिन होगा, जैसा कि आज भी कई जगह मसीही लोगों के लिए कठिन है। कई बार और परीक्षाओं तथा परेशानियों से बचने के लिए यीशु का इनकार करने की परीक्षा आती है। रोमियों 8:25 का अर्थ है कि हमें धीरज रखना *आवश्यक* है, परन्तु यह इस बात का भी संकेत देती है कि हम अपनी आशा के कारण धीरज रख *सकते* हैं। हम ईश्वरीय इच्छा शक्ति अर्थात उसे भाने के लिए हमारी इच्छा के साथ उसकी सामर्थ के द्वारा धीरज रखते हैं।

उस वचन को न भूलें जिससे हमने अपना वचन पाठ आरम्भ किया था: ''क्योंकि मैं समझता हूं कि इस समय दुख और क्लेश उस महिमा के काम में जो हर किसी पर प्रकट होने वाले हैं, कुछ भी नहीं'' (आयत 18)। एक आदमी से जिसे आमतौर पर बाइबल पढ़ते देखा जाता था, पूछा गया कि उसे इस पुस्तक से क्या संदेश मिला। मुस्कुराते हुए उसने कहा, ''यही कि बुरी बातें अन्तिम बातें नहीं होती।'' चाहे जो भी हो जाए, मसीही व्यक्ति की आशा कल के लिए है।

सारांश

कहा गया है कि ''रोमियों की पुस्तक का आठवां अध्याय कोई दण्ड नहीं के साथ आरम्भ होता है और कोई जुदाई नहीं के साथ समाप्त होता है,''[35] जबकि इस बीच, कोई निराशा नहीं।[36] हमारे वचन पाठ का आरम्भ कष्ट के साथ हुआ, परन्तु जल्दी से यह *आशा* के विषय में पहुंच गया। जिम मैज़्गुइगन ने ''आशा'' को ''मसीही सांस की हवा'' कहा है।[37] क्या *आप* के पास यह आशा है? कुलुस्से के मसीही लोगों को लिखते हुए पौलुस ने कहा, ''मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है'' (कुलुस्सियों 1:27)। क्या मसीह आप में है, और आप मसीह में हैं? यदि नहीं, तो मेरी प्रार्थना है कि आज ही प्रेमपूर्वक उसकी आज्ञा मानते हुए उसके साथ एक हो जाएं (रोमियों

6:3-5)।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

हमारे वचन पाठ के लिए कोई और शीर्षक "अनुग्रह और महिमा के बीच" कराहना दोनों के बीच में है। वचन पाठ को "एक अन्तर" (कष्ट और महिमा का अन्तर) (आयतें 17ख, 18), "एक सज़्बन्ध" (सृष्टि और मसीही लोगों के बीच) (आयतें 19-23) और "एक विश्वास" (आशा के कारण विश्वास) हुआ (आयतें 24, 25) में बांटा जा सकता है।

कई लेखक इस पृथ्वी के सज़्बन्ध में अच्छे भण्डारी होने के लिए मसीही लोगों की आवश्यकता के लिए रोमियों 8:19-22 को लागू करते हैं (उदाहरण के लिए, इसे दूषित करने या इसके संसाधनों को खत्म करने के लिए नहीं)।

टिप्पणियां

[1]*इलस्ट्रेटिंग पॉल'स लैटर टू दि रोमन्स,* सं. जेज़्स, एफ. हाईटॉवर (नैशविल्ले: ब्राडमैन प्रैस, 1984), 61 में हेरल्ड टी. ब्रेसन, "होप" से लिया गया। [2]*रोमियों, 2* पुस्तक में "अपने बच्चों को सिखाने के लिए तीन सच्चाइयां, (5:1-8)" पाठ में "आशा" में टिप्पणियां देखें। [3]चार्ल्स स्पर्जन, *स्पर्जन'स कमैंट्री ऑन ग्रेट चैप्टर्स ऑफ़ द बाइबल,* संक. टॉम कार्टर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पज़्लिकेशंस, 1998), 263. [4]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1988), 319 में उद्धृत। [5]KJV में यहां और 20 तथा 21 आयतों में "creature" है, परन्तु आयत 22 में यह "creation" है। चारों आयतों में मूल यूनानी शज़्द एक ही है। [6]"पुत्र होने की आशीष" पाठ की तरह "परमेश्वर के पुत्र" का इस्तेमाल आम तौर पर "परमेश्वर की *संतान*" के लिए किया जाता है (देखें आयत 21), वे पुत्र हों या पुत्रियां हैं। [7]डज़्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कज़्पलीट एज़्सपोज़िस्टरी डिज़्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पज़्लिशर्स, 1985), 217-18. [8]एफ़. गोडेट, *कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द रोमन्स,* अनु. ए. ज़्यूसिन, संशो. व संपा. टेलबोट डज़्ल्यू. चैज़्बर्स (पृष्ठ नहीं: फंक एण्ड वंगनल, 1883; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पज़्लिशिंग हाउस, 1969), 313. [9]एन. वुड्स, *हाऊ टू रीड द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट* (मेज़्फिस: लेखक द्वारा, 1970), 21 से लिया गया। [10]वाइन, 218, 663.

[11]वाइन, 137. [12]इस प्रश्न की विस्तृत चर्चा मोसेस ई. लार्ड, *कमैंट्री ऑन पॉल'स लैटर टू रोमन्स* (लैज़्सिंग्टन, कैंटकी: पृष्ठ नहीं., 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पज़्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 273-74 में दी गई है। [13]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैज़्सस: स्वीट पज़्लिशिंग कं., 1965), 63. [14]जे. डज़्ल्यू. मैज़र्वे एड फिलिप वाई. पैंडल्टन, *थेस्सलोनियंस, कोरन्थियंस, गलेशियंस एण्ड रोमन्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पज़्लिशिंग, तिथि नहीं), 362. [15]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशंस कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पज़्लिशिंग हाउस, 2000), 266. [16]रोमियों 5:12-21 पर और जानकारी के लिए, *रोमियों, 2* पुस्तक में पाए जाने वाले पाठ "5:12-21 का एक परिचय: 'एक मनुष्य के द्वारा,' " और "5:12-21 का एक अध्ययन: 'दो आदम।' देखें। " [17]जिम हिल्टन, *जस्ट डाइंग टू लिव* (कलामज़ू, मिशिगन: मास्टर'स प्रैस, 1976), 105. इसे जहां आप रहते हैं, उस समाज के अनुसार बदल लें। आप कह सकते हैं, "यदि आपने रेडियो [या टीवी] पर समाचार सुने हैं ... या यदि आपने [क्षेत्र के सबसे बड़े नगर से] समाचार सुना है। ..." [18]लैरी डियसन, *"दि राइटयसनेस ऑफ़ गॉड": एन इन डेप्थ स्टडी ऑफ़ रोमन्स,* संशो. (ज़्लिफटन पार्क, न्यू यॉर्क: लाइफ कज़्युनिकेशंस, 1989), 222. [19]KJV में "made subject to vanity" है। "Vanity" लातीनी शज़्द से लिया गया है जिसका अर्थ "खाली" है। परन्तु आज इसका इस्तेमाल "घमण्ड" के पर्याय के रूप में किया जाता है। NKJV में "futility" है। [20]वाइन, 657, 198.

[21]NASB में "Him" है। (जिसमें "H" बड़ा है) यह संकेत देने के लिए कि जिसने इसे अधीन किया वह परमेश्वर है। कुछ लेखकों का विचार है कि "him" यहां आदम, शैतान या दोनों के लिए है। परन्तु वाक्य "आशा" से जोड़ा गया है। आदम और शैतान उस पाप में सम्मिलित थे, जिसके कारण पृथ्वी पर समस्याएं आईं, परन्तु *परमेश्वर* ही था, जिसने *आशा* की बात जोड़ी। [22]बोए गए बीज और परिणाम देने वाले पौधे में एक सम्बन्ध है। पौधा बीज *जैसा दिखाई* नहीं देता, परन्तु जो दिखाई देता है, वह यह है कि यह इस पर निर्भर करता है कि बीज कैसा बोया गया था। [23]बाइबल में स्वर्ग के विवरण के लिए कई अलंकारों का इस्तेमाल किया गया है। प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में, *नगर* का इस्तेमाल किया गया है। हमारे सांसारिक मन आत्मिक व्यवस्थाओं को समझ नहीं सकते, इसलिए "नया आकाश और नई पृथ्वी" तथा स्वर्गीय नगर जैसे अलंकारों का इस्तेमाल हमें *कुछ* विचार देने के लिए किया गया है कि स्वर्ग कैसा दिखाई देता है। [24]"कराहना" और "जनने की पीड़ाओं" के लिए दोनों यूनानी शब्दों में पूर्वसर्ग *sun* ("के साथ" या "इकट्ठे") है। यह पक्का नहीं है कि सृष्टि किसके साथ कराहती और पीड़ित है। शायद यह हमारे साथ है, या शायद पौलुस के मन में सृष्टि के विभिन्न भागों के इकट्ठे कराहने की बात कही। [25]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिल डिक्शनरी ऑफ न्यू टैस्टामेंट,* संपा. गरहर्ड किट्टल एण्ड गरहर्ड फ्रैड्रिक, अनु. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 1353. जी. बर्टम, "*ōdín.*" [26]यह टिप्पणी जॉन कैल्विन की मानी जाती है। (मौरिस, 323.) [27]डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 172. [28]जिम टाउनसेंड, *रोमन्स: लेट जस्टिस रोल* (एलजिन, इलिनोइस: डेविड सी. कुक पब्लिशिंग कं., 1988), 69. [29]"आत्मा का पहला फल" का अर्थ मुख्यतया "पवित्र आत्मा ... जो हमारी मीरास के बयाने के रूप में दिया गया" वाला ही है (इफिसियों 1:13, 14)। इस पुस्तक में पहले आए पाठ "आत्मा का वास (8:9, 11)" में "बयाने के रूप में पवित्र आत्मा" पर टिप्पणियां देखें। [30]*रोमियों, 2* पुस्तक में आए पाठ "तीन छोटे शब्द (3:24ख-26)" में "छुटकारा" शब्द पर टिप्पणियां देखें।

[31]ब्रायन चैपल, *इन दि ग्रिप ऑफ़ ग्रेस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1992), 57-58 से लिया गया। [32]विलियम ब्राकले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 110. [33]ई. सी. मैकंज़ी, *14,000 कुइप्स एण्ड कोट्स* (न्यू यॉर्क: विंग्स बुक्स, 1980), 242 से लिया गया। [34]*रोमियों, 1* पुस्तक में पाए जाने वाले पाठ "क्या आप न्याय के दिन के लिए तैयार हैं (2:1-16)" तथा *रोमियों, 2* पुस्तक के पाठ "अपने बच्चों को सिखाने के लिए तीन सच्चाइयां (5:1-8)" पर टिप्पणियां देखें। [35]स्पर्जन, 257. [36]सी. ए. फौक्स से लिया गया; मौरिस, 299 में उद्धृत। [37]जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: मोंटैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 258.